|| ॐ श्री पञ्चवदनाय आञ्जनेयाय नमः ||

(विशेष : यह दिव्य स्तोत्र श्रध्देय स्वामी रुपेश्वरानंद जी महाराज द्वारा संशोधित स्तोत्र है ! अन्य पुस्तकों में यह कवच विस्तार से और अव्यवस्थित है ! अपने साधनात्मक अनुभव के आधार इसे स्वामीजी ने इसे संशोधित किया है ! जिन्हें इस विषय में संदेह हो , कृपया वे इसका प्रयोग न करें !)

विनियोग :

श्री पञ्चमुख विराट हनुमान स्तोत्र मालामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्रीछन्दः । पञ्चमुखविराट् हनुमान देवता । ह्रीं बीजम् । श्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । श्री पञ्चमुखविराट् हनुमान देवता प्रसन्नार्थे मम सकल आभिचारिक दोष निवारणार्थे च शत्रु बाधा निवृत्तये च पाठे विनियोग : |

ध्यान :

पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्ण
वक्त्रं शशाङ्कशिखरं कपिराजवर्यम ।
पीताम्बरादिमुकुटैरूपशोभिताङ्गं
पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥

पञ्चवक्त्रं महाभीमं त्रिपञ्चनयनैर्युतम् ।
बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥

मूल कवच :

पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् ।
दन्ष्ट्राकरालवदनं भृकुटीकुटिलेक्षणम् ॥ ३ ॥

अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् ।
अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥ ४ ॥

पश्चिमं गारुडं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् ॥
सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम् ॥ ५ ॥

उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् ।
पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् ॥ ६ ॥

ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् ।
येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाख्यं महासुरम् ॥ ७ ॥

जघान शरणं तत्स्यात्सर्वशत्रुहरं परम् ।
ध्यात्वा पञ्चमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ॥ ८ ॥

खड्गं त्रिशूलं खट्वाङ्गं पाशमङ्कुशपर्वतम् ।
मुष्टिं कौमोदकीं वृक्षं धारयन्तं कमण्डलुम् ॥ ९ ॥

भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशभिर्मुनिपुङ्गवम् ।
एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भजाम्यहम् ॥ १० ॥

इति कवचम् ||

(विशेष मार्गदर्शन : सामान्यतः जो लाल अक्षर में है इतना ही श्री पंचमुख हनुमान कवच है ! श्री हनुमान कवच पाठ अथवा सिध्दी हेतु इतना ही पाठ करना पर्याप्त है ! परतु जो साधक विशेष कार्य सिध्दी तंत्र , मंत्र आदि आभिचारिक दोष की निवृत्ति हेतु यह प्रयोग करना चाहते है ! वे श्री हनुमान पञ्च मुख हनुमान मंत्र का भी जप और होम करें ! भुत प्रेत अथवा तंत्र बाधा का काट करने हेतु श्रेष्ठ उपाय है ! साधक का संयमी, ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला (साधनाकाल में) और परोपकारी होना चाहिए ! विशेष

तंत्र /मंत्र का प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम के " तंत्र प्रशिक्षण शिविर" में भाग ले सकते है !

अथ पञ्च मुख हनुमान मंत्र:

(इस मंत्रो का जप करते हुए देसी गाय का घी अथवा तिल – 25 % , जौ 25 % , शक्कर (देसी खांड) 50 % से हवन करें ! बिना हवन के यह मंत्र श्रेष्ठ सफलता नही देगा | यदि इस विधि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना है तो वे स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम की ओर से आयोजित मंत्र साधना शिविर में भाग लेकर विधिवत ज्ञान प्राप्त कर सकते है !)

ॐ जंजंजंजं कूर्ममूर्तये पञ्चमुखवीरहनुमते परयन्त्र परमन्त्र परतन्त्र उच्चाटनाय स्वाहा ।
(11 आहुति)

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा । (3 आहुति)

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकल भूतप्रेतदमनाय स्वाहा । (3 आहुति)

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पश्चिममुखाय गरुडाननाय सकलविषहराय स्वाहा । (3 आहुति)

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनायोत्तरमुखायादिवराहाय सकलसम्पत्कराय स्वाहा । (3 आहुति)

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनायोर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशंकराय स्वाहा । (3 आहुति)

ॐ जंजंजंजं कूर्ममूर्तये पञ्चमुखवीरहनुमते परयन्त्र परमन्त्र परतन्त्र उच्चाटनाय स्वाहा ।
(11 आहुति)

द्वारा ,

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम ,
बलुआघाट ,जि- चंदौली -वाराणसी
उत्तर प्रदेश – 232109
W/No. 7607233230 https://swamirupeshwaranand.in/